समकालीन

स्त्री और दलित-विमर्श

Scanned by CamScanner

PROCEEDING

ISBN 978-81-923650-6-0

समकालीन

स्त्री और दलित-विमर्श

संपादक

प्रा.डॉ.मंजूर सैय्यद

हिंदी विभाग, म.वि.प्र.संचालित

कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, ओझर (मिग), नाशिक (महाराष्ट्र)

सह-संपादक

प्रा. श्रीमती मनिषा चिने,

प्रा. सौ. जयश्री पवार

अध्यक्ष

प्राचार्य डॉ. ए. पी. पाटील

मराठा विद्या प्रसारक समाज, नाशिक संचालित

कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, ओझर (मिग), नाशिक (महाराष्ट्र) पिन ४२२२०६

Phone : Office: 91-(02550) 206019,

e-mail : ozarcollege@gmail.com, Website : www.ozarcollege.com

ब्रेन टॉनिक

ब्रेन टॉनिक प्रकाशन गृह, नाशिक

Scanned by CamScanner

ISBN 978-81-923650-6-0

प्रकाशन क्र. 17

संस्करण : दिसंबर 2014

© 2014, संपादक

डी.टी.पी. एवं मुद्रण सेवा
प्रिंटवेब, नाशिक (महाराष्ट्र)
Phone : 9822982315

प्रकाशक
हर्षल वरखेडे,
ब्रेन टॉनिक प्रकाशन गृह,
२४, चेरी हिल, पाइपलाइन रोड,
नाशिक - ४२२०१३ (महाराष्ट्र)

मूल्य ₹ ५००/-

Scanned by CamScanner

क्र.	आलेख	लेखक	पृष्ठ क्र.
३०	समकालीन महिला लेखिकाओं के कहानियों में नारी समस्या	प्रा. डॉ. शिवाजी सागोळे	७२
३१	हिंदी सिनेमा गीतों में नारी-विमर्श	प्रा. निर्मला राजपूत	७४
३२	समकालीन हिंदी कथा साहित्य में कामकाजी नारी	डॉ. अमानुल्ला शेख	७५
३३	'जीवन छाया-धूप दोहा' संग्रह में निहित नारी	डॉ.बाबासाहेब माने	७७
३४	समकालीन हिंदी कहानी साहित्य में स्त्री-विमर्श	डॉ. कामिनी बल्लाळ	८०
३५	'दोहरा अभिशाप' में चित्रित नारी संघर्ष	धनराज बिराजदार	८२
३६	'उपन्यास हजार घोड़ों का सवार' में दलित विमर्श	श्वेता चौधारे	८३
३७	मनोज सोनकर कृत शोषितनामा के विशेष सन्दर्भ में दलित विमर्श	प्रा.डॉ. सुजाता पाटिल	८५
३८	उपन्यास एवं नारी	ईला बारिया	८८
३९	मृदुला गर्ग और प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित नारी	पी. सी. एच. जानी	९०
४०	चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श	स्वाती अहिरे	९२
४१	मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास में नारी समस्या	प्रा. डॉ. ए. जे. बेवले	९३
४२	स्त्री-विमर्श एवं भूमंडलीकरण का प्रभाव	डॉ. सीमा जाधव	९५
४३	हिंदी साहित्य एवं स्त्री	डॉ. कल्पना मोदी	९७
४४	अनमेल विवाह की त्रासदी भोग रही विवश स्त्री	डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर	९९
४५	समकालीन साहित्य में नारी-विमर्श	प्रा. डॉ. ऐनूर इनामदार	१००
४६	समकालीन हिंदी के उपन्यासो में स्त्री -विमर्श	प्रा.डी.एम.टिळेकर	१०१
४७	समकालीन हिन्दी उपन्यास साहित्य में स्त्री विमर्श	प्रा.डॉ.श्रीमती अनिता वेताळ-अंत्रे	१०३
४८	समकालीन साहित्य में स्त्री-विमर्श	संजय वर्मा	१०४
४९	समकालीन महिला लेखिकाओं के कथा-साहित्य में ''नारी-चेतना''	डॉ. शाम सानप	१०६
५०	स्त्री-विमर्श परिभाषा और परिव्याप्ति	प्रा.डॉ.वीरश्री आर्य	१०७
५१	इक्कीसवी सदी की हिंदी दलित कविताओं में संवेदना	डा. बबन चौरे	११०
५२	समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री-विमर्श	प्रा.डॉ. वाल्मीक सूर्यवंशी	११२
५३	समकालीन कथा साहित्य: स्त्री-लेखन के संदर्भ में	प्रा.डॉ.दीपक पवार	११४
५४	स्त्री विमर्श : ऐतिहासिक परिशीलन	डॉ. सुरेश शेळके	११६
५५	समकालीन कहानी लेखन : स्त्री-विमर्श	डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र	११९
५६	सुरेंद्र वर्मा के 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' नाटक में स्त्री विमर्श	प्रा. दशरथ खेमनर	१२१
५७	राही मासूम रज़ा के 'आधा गाँव' उपन्यास में दलित विमर्श	डॉ० हरिश्चन्द्र शाही	१२३
५८	हिंदी साहित्य में दलित विमर्श - उपन्यास विशेष संदर्भ में	डॉ. सैय्यद मंजूर	१२६

ISBN 978-81-923650-6-9

Scanned by CamScanner

संदर्भ ग्रंथ :-
१. समकालीन हिंदी कहानियों में नारी के विविध रूप - डॉ. घनशाम दास भूतड़ा
२. समकालीन हिंदी कहानी और समाजवादी चेतना - डॉ. किरण बाला
३. समकालीन हिंदी कहानी - बलराम
४. हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार - डॉ. एम वेंकटेश्वर

(हिंदी विभाग प्रमुख, श्री ज्ञानेश्वर महाविद्यालय नेवासा)

33 'जीवन छाया-धूप दोहा' संग्रह में निहित नारी

डॉ. बाबासाहेब माने

हमारी परंपरा के मुताबिक हमने जाना कि जहाँ नारी की पूजा एवं आदर होता है, वहाँ पर भगवान का वास होता है। परंतु पिछले दो-तीन दशक में हिंदी साहित्य में विविध विमर्शों की बड़े जोरशोर से चर्चाएँ चल रही हैं। जिनमें नारी विमर्श, दलित विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श या मुस्लिम विमर्श आदि प्रमुख रुप से आते हैं। इनमें से दलित एवं मुस्लिम विमर्श इन दोनों को अगर निकाल दिया जाए तो क्या यह सही नहीं है कि नारी विमर्श की चर्चा एवं उसके महत्त्व का प्रतिपादन इन दो-तीन दशकों से पहले नहीं होता था? अगर हिंदी साहित्य पर सरसरी नजर ड़ाली जाए तो पता चल जाता है, कि इसके पूर्व भी कई हजार वर्षों से नारी के महत्त्व को साहित्य एवं पुराणों में अंकित किया गया है। तब से लेकर आज तक कमाधिक मात्रा में निरंतर यह परंपरा बरकरार रही है। फिर भी नारी के प्रति देखने का पुरुषी नजरिया संपूर्णत: नहीं बदल सका है। नारी पर आज तक रामायण, महाभारत, से लेकर पद्मावत, कामायनी, उर्वशी, यशोधरा यहाँ तक कि वर्तमान काव्य-कृतियों में भी उसकी हालत एवं महत्त्व को अंकित किया जा चुका है। फिर भी समय एवं परिस्थिति के अनुसार निरंतर उस पर अन्याय एवं अत्यचार होते ही रहे हैं। कुछ गिने-चुने महानुभवों ने नारी की महानता को जीवन में उतारकर उसे सर्वोच्च स्थान पर आरुढ़ किया है। उनके ही नाम इतिहास में दबे हो चुके हैं। बाकी बहुसंख्य पुरुषी समाज आज भी नारी का विभिन्न तरह से शोषण करता नजर आता है।

नारी के विविध रुपों से हम परिचित हैं। कभी वह माता एवं जननी के रुप में हमारे सामने आती है तो कभी पत्नी बनकर हमें त्याग, प्रेम, समर्पण एवं कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देती है। कभी वह हमारी बहना बनकर हमारे साथ खेलती-कुदती स्वयं तो बड़ी होती ही है, साथ ही हमें भी बड़ा आदमी बनाने की कोशिश करती है तो कभी हमारे सुख-दु:खों को दुलारती, सहलाती हमारी प्रियेसी बनकर हमें जीवन में आगे बढ़ना सिखाती है। नारी के इन विविध योगदानों के बावजूद आज भी नारी पर विविध तरह के अन्याय-अत्याचार हो रहे हैं। यह बड़ी ही शर्मनाक बात है। आखिर यह कब तक चलता रहेगा? यह अनुत्तरीत सवाल है। अत: वर्तमान भारतीय नारी की खस्ता हालत को डॉ. राकेश सक्सेना जी ने दोहों के माध्यम से प्रभावी रुप में अंकित किया है।

वर्तमान में नारी की हालत शिक्षा के क्षेत्र में जरुर सुधर चुकी है। परंतु कोई अमुलचूल परिवर्तन उसके जीवन में नहीं आया है। वह शिक्षा ग्रहण करने के बावजूद भी दहेज का साधन ही रह गई है। संपूर्ण भारतवर्ष में इनी-गिनी जातियों को छोड़कर लगभग अस्सी प्रतिशत जातियों में आज भी दहेज लिया जाता है। जबकि दहेज लेना एवं देना कानूनन अपराध है। इसके लिए सजा का प्रावधान भी किया जा चुका है। फिर भी भारत में दहेज बेखौफ लिया जाता है। वैसे तो कन्यादान करना भी हर एक पिता के लिए महान कार्य होता है। चुँकि लड़की को हमारे यहाँ रत्न एवं लक्ष्मी माना गया है। वह दोनों परिवारों का उद्धार करती है। फिर भी लड़की के पिता को दहेज के लिए हमेशा सताया जाता है और उसे कुछ-न-कुछ दहेज देना ही पड़ता है। कवि कन्यादान को यज्ञ एवं तप से भी पवित्र कार्य घोशित करता है और कन्या को दहेज का साधन मानता है -

यज्ञ और तप से बड़ा, कन्यादान महान।
कन्या आज दहेज है, क्या होगा भगवान।।[1]

जहाँ नारी दहेज के कारण पीडित हैं, वहीं वह पुरुशी हवस की शिकार भी बनी हुई है। शिक्षा की बदौलत उसने पुरुषों के समान विविध क्षेत्रों में स्थान पा लिया है। वह पुरुषों के कंधे-से-कंधा मिलाकर काम कर रही है। किंतु जहाँ वह काम कर रही है, वहीं पर उसे कभी मानसिक तो कभी शारीरिक शोषण का शिकार होना पड़ रहा है। यह हमारे समाज की सबसे बड़ी विडंबना है। कवि नारी के हो

ISBN 978-81-923650-6-0

Scanned by CamScanner

रहे इस शोषण पर यूँ प्रकाश डालते हैं –

सदियों से बनती रही, नारी नर की प्यास।
धर्म नाम पर हो रहा, उसका भोग विलास ।।

इस दोहे पर गौर से विचार किया जाए तो यह ज्ञात होता है कि नारी पर सदियों से अन्याय–अत्याचार होते रहे हैं, फिर भी उसकी सहनशीलता देखिए , वह आज तक निरंतर दु:ख–दर्दों को झेलती हुई मनुष्य की पीढ़ियों को जीवंत रखने में कामयाब रही है। यह की उदारता एवं सहनशीलता का परमोच्च बिंदु नजर आता है ।

जहाँ हमारे गौरवशाली इतिहास में नारी को उच्चतम् स्थान पर आरुढ़ कर दिया है । वहीं वह उसी के देश में आज बाजार के आनेवाले मामूले से साधन के रुप में काम आ रही है । आजकल बाजार का माहौल बहुत गर्म है। दिन–ब–दिन बाजार में सुख–साधनों को बेचने एवं खरीदने की होड़–सी लगी हुई है । ऐसे में घेरुलु चीजों से लेकर खास तौर पर पुरुषों के लिए जो चीजें जाती हैं । उन चीजों का विज्ञापन करने के लिए भी नारी का इस्तेमाल हो रहा है । ऐसे माहौल में नारी का भाव बहुत ही गिर गया अत: कवि नारी को आदरयुक्त स्थान पर देखना चाहता है । इसलिए जो लोग नारी की काया का दुरुपयोग कर रहे हैं उन पर वह प्रहार करता है –

विज्ञापन के हित बनी, तेरी काया आज ।
इतनी सस्ती बेचता , ये निर्लज्ज समाज ।।

नारी की इस हालत के लिए केवल पुरुष ही जिम्मेदार नहीं है , इसके लिए कई मायने में नारी भी जिम्मेवार प्रतीत होती है। जिसे अश्लिलता कहते हैं , उस अश्लिलता को बढ़ावा देने में नारी का भी थोड़ा–बहुत योगदान जरुर होता है । यहाँ उन नारियों की बात रही है जो पश्चिमी दृष्टिकोण को अपनाकर अपने महत्त्वपूर्ण अंगों को कभी फिल्मों के माध्यम से तो कभी जनमानस के बीच दिखाने की कोशिश करती हैं । बाकी नारियों की त्रासदी के लिए पुरुषी अंहकार जिम्मेवार है । इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती। जिस तरह से शहरी जीवन में नारी का उत्पीड़न हो रहा है , उसी तरह से गाँवों में भी नारी पर कम अत्याचार नहीं होते। जो नारी एक की जीवनपर्यंत मद्द करती है । वही नारी अपने पति के द्वारा अपने ही घर में कैदी के रुप में जिंदगी काटने लिए मजबूर है। जब पति जीवित रहता है , तब तक उसकी सेवा उसे करनी पड़ती है और पति के मरने के बाद अपने बेटों की सेवा में लीन होना पड़ता है। पति और अपने खुद के बेटों से मिली रुखाई के बावजूद भी वह अपने जीवन को जीती रहती है । कदापि वह अपने बेटे को बचपन में किए हुए उपकारों का मुआवजा नहीं माँगती । कभी अपने कोख में पाले हुए नौ महीने का एहसान चुकता करने की बात करती । वह निरंतर पीड़ा सहन करती है और अपने बच्चों के हर कष्ट को दूर करने की इमानदार कोशिश करती है। वह जहाँ एक अपने बच्चों पर ममता छलकाती है, वहीं वह अपने मायके के लोगों के प्रति भी निश्चल प्यार अपने मन में पाले रहती है। उसके रुप को भगवान भी नमन करता प्रतीत होता है । यथा–

पीड़ा तेरा धर्म है, ममता तेरा दान।
तेरे जननी रुप को , नमन करे भगवान ।।

सचमुच ही मनुष्य के जीवन में माता का किरदार बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है। माता अपने बच्चों के हर कष्ट एवं प्रगति में साथ देती रहती है । चाहे उसके बच्चे अच्छे हों या बुरें । हमेशा वह अपने बच्चों को बेहतर जीवन जीने के लिए प्रेरित करती रहती है। वह किसी भी तरह का भेदभाव नहीं करती। बच्चे की प्रगति हेतु हर संभव प्रयास करने के लिए निरंतर तैयार रहती है । नारी के इस की कवि प्रशंसा करता हुआ लिखता है –

माँ जैसा कोई नहीं, जग में है किरदार ।
बच्चों को हर कष्ट से , देती पल में तार ।।
शुभाशीश भंड़ार को, रखे सर्वथा साथ ।
संतानों की प्रगति के , पीछे माँ का हाथ ।।

नारी कभी माँ है तो कभी बहन। कभी पत्नी है तो कभी प्रेयसी। इन सारे रुपों में नारी का किरदार पुरुष को प्रगति के पथ पर ले का रहता है । परंतु पुरुषी मानसिकता इन रुपों को नजरांदाज करती है और उस पर विविध प्रकार के जुल्म ढ़ाती रहती है । कभी धर्म के नाम पर तो कभी रुपयों के लालच में , कभी गंदी हवस के कारण तो कभी अंहकार के कारण उसे कोठे पर जाने के लिए मजबूर करती है । उसे भरे बाजार में सरेआम निलाम कर देती है । इक्कीसवीं सदी का यह भी एक खरा–खरा यथार्थ है । इस पर कवि यथार्थ के साथ प्रकाश डालता है –

पुरुषों के हाथ बिकी , है कदमों की धूल ।

ISBN 978-81-923658
Scanned by CamScanner

वेश्या वन में उग रहे , कितने घने बबूल ।।'

इतना सबकुछ हो रहा है फिर भी वह गाय की तरह खामोशी से सब सहती जाती है । यह भी उसकी एक कमजोरी है । अतः नारी को अगर सही मायने में अपने अधिकारों की प्राप्ति करनी है तो उसे चुपचाप नहीं रहना होगा । उसे अपने मन में ठान लेना होगा कि आखिरकार कब तक वह पुरुष का शिकार होती रहेगी । अब वह शिकार नहीं, बल्कि शिकारी बन जाएगी और अपने अधिकारों को प्राप्त करके ही दम लेगी । इसतरह के विचारों से प्रेरित होकर उसे संघर्ष करना होगा । तभी उसे अपने अनुसार जीवन जीने का अवसर मिल पाएगा । इसी को उद्घाटित करते हुए सक्सेना जी लिखते हैं -

खाद्य नहीं खादक बने , नारी विविध प्रकार ।
मुक्ति तभी मिल पाएगी, अपने मन अनुसार ।।'

आदिम युग से लेकर आज तक भारतीय समाज में बेटे की मानसिकता पुरजोर तरीके से वास करती रही है । आज भी उसमें कोई अमुलचूल परिवर्तन नहीं हुआ है । जितना पढ़ा-लिखा एवं उच्च शिक्षित समाज हो चुका है, उतनी ही उसकी मानसिकता गिरने लगी है। उसे हमेशा अपना वंश चलाने के लिए बेटे की ही ख्वाईश रहती है । इसलिए स्त्री भृण हत्या का सिलसिला निरंतर चलता आ रहा है । इक्कीसवीं सदी के मुहाने पर भी भारतीय समाज में स्त्री अर्भक को गर्भ में ही मारने का घिनौना कार्य हो रहा है । परिणाम स्वरुप लडकियों की संख्या साल-दर-साल कम होती जा रही है । यह सिलसिला अगर इस तरह से चलता रहेगा तो लड़कों को पत्नी के रुप में नारी मिलना दुष्कर कार्य बन जाएगा और अगली पीढ़ी को भी इसका खामियाजा भुगतना पडेगा । ऐसा भी नहीं है कि भारतीय शासन व्यवस्था ने इस पर कोई उपाय नहीं ढूँढ़ा है । उसने तो इस अपराध के लिए कई तरह के कानून बनाए हैं । परंतु उन कानूनों का खौफ लोगों के दिलों में नहीं पहुँच गया है । इसलिए तो स्त्री भृण हत्या का सिलसिला भारत निरंतर होता दृष्टिगोचर होता है । यह समस्या भी कवि से छिपी नहीं है । आखिरकार कवि भी इस सदी का एक सामाजिक हिस्सा है । वह भारतवर्ष में स्त्री पर हो रहे अन्यायों को भलिभाँति जानता है । इसलिए वह कहता है कि -

आदिम युग से ही रहे, बेटे के अरमान ।
पर बेटी के बिना कहाँ , आदम की पहचान ।।'
जीवित रहने का मिले, नारी को अधिकार ।
चलना, फिरना, बोलना, उसका शिष्टाचार ।।'

परंतु नारी को यह अधिकार तभी मिलेगा, जब प्रत्येक पुरुष स्वयं से नारी को आदर देना शुरु करेगा । उस पर होने वाले अत्याचारों को रोकने में उसकी मदद करेगा । उसके सुख-दुःख में बराबरी का भागीदार होगा । उसके माता, बहन, पत्नी एवं प्रियेशी के रुपों में अपनापन देखेगा । तभी नारी खुशी-खुशी अपना जीवन जी पाएगी । भविष्य की पीढ़ियों को जीवंत रखेगी । पुरुषों के साथ मिलकर अपने परिवार, समाज एवं देश का विकास बेझिझक कर पाएगी । इसी तरह से कवि 'डॉ. राकेश सक्सेना'।' जी ने 'जीवन छाया-धूप' दोहा संग्रह में नारी की हालत को प्रभावी ढ़ंग से रेखांकित किया है ।

संदर्भ सूची –

१) जीवन छाया-धूप - डॉ. राकेश सक्सेना, पृ. ३०, ज्ञान प्रकाशन, किदवई नगर, कानपुर ।
२) वही , पृ.३१
३) वही , पृ.३१
४) वही , पृ.२९
५) वही , पृ. २९
६) वही , पृ. ५३
७) वही , पृ.३३
८) वही, पृ.३२
९) वही , पृ.३२

ISBN 978-81-923650-6-0

Scanned by CamScanner

स्त्री-लेखन बनाम स्त्री-विमर्श - चुनौतियाँ

आज की ताजा स्थितियों में जब लेखकीय प्रतिबद्धता और इमानदारी के नाम पर साहित्यिक पोर्नोग्राफी का बाजार गर्म है, स्त्री-लेखन के लिए इन रास्तों पर रपट जाने के भरपूर आकर्षण मौजूद हैं। स्पष्टतः ऐसे बोल्ड और साहसिक लेखन के लिए रातो रात चर्चा और सुर्खियों की ऐसी रेड-कार्पेटें बिछा दी जाती हैं कि नये ही नहीं पुरानों के भी भटक जाने की पूरी गुंजाइश बनी रहती है।

स्त्री-लेखन को दूसरा बडा खतरा विमर्श की आड में दी जाने वाली फतवेबाजीयों से है। इनकी वजह से एक ऐसा मनोवैज्ञानिक दबाव सा बन जाता है कि लेखक अनायास ऐसी कहानियाँ लिखने के लिए बाध्य हो जाता है जो किसी न किसी विमर्श के खूँटे बंधती है, भले ही विश्वसनीयता की दृष्टि से लचर और लाउड ही क्यों न हों। जब तक कहानियों, कृतियों के आधार पर विमर्श हो रहे है, तब तक तो फिर भी ठीक है लेकीन जब विमर्शों को ध्यान में रखकर कहनियाँ रची जाने लगे तो साहित्य की विश्वसनीयता खंडित हो संदेह के घेरे में आ जाती है।

- सूर्यबाला

15-12-2014

ISBN 978-81-923650-6-0

₹ 500/-

समकालीन

Scanned by CamScanner